हरियाणा :

सिरसा में फसल 50-65 दिन कि वानस्पतिक अवस्था में है| किसानों के खेतों में सफ़ेद मक्खी की संख्या 7 से 11 प्रति 3 पत्तियाँ दर्ज की गई है| डस्की कपास बग का प्रकोप के आस पास के क्षेत्रों में देखा गया है| हिसार जिले में कपास 57-77 दिनों की है तथा पौधो में फूल आने लगे है| यहाँ खेतों में खाद की दूसरी खुराक देने की आवश्यकता है साथ ही निंराई और गुड़ाई कार्य जारी है, देर से बोई गई फसल में जैसिड और लीफहोप्पर का संक्रमण बढ़ रहा है| जबकि पहले और समय पर बोई गई फसल में थ्रिप्स का संक्रमण देर से बोई गई फसल की तुलना में कम है| सफ़ेद मक्खी का संक्रमण यहाँ चिंताकारक नहीं है| कुछ खेतों में जड़ गलन देखा गया है| कुल मिलाकर फसल बेहतर स्थिति में है|

सलाह : किसानों को सलाह दि जाती है कि वे फसलों की नियमित निगरानी करते रहे| साथ ही अंत:सस्य क्रियाएँ (इंटरकल्चरल ऑपरेशन) कराते रहे और सफेद मक्खी के लिए पीले स्टीकी ट्रैप का उपयोग शुरुवाती संक्रमण के लिए करते रहे| यदि किसी चूषक किट का संक्रमण आर्थिक हानी स्तर (ईटीएल) से अधिक हो तो नीम आधारित कीटनासशक का 5मिली/लीटर का मिश्रण बना कर छिड़काव करे|

राजस्थान :

श्रीगंगानगर में फसल 42-72 दिन कि वानस्पतिक अवस्था में है | यहाँ आवश्यकतानुसार सिंचाई तथा कि जाये| खरपतवार : इटसीट, टंडला, मोथा ने फसल को प्रभावित किया है | खरपतवार नियंत्रण करें| चूषक किट का संक्रमण आर्थिक हानी स्तर से कम है|

सलाह : किसानों को सलाह दी जाती है कि रस चूषक किट (सफेद मक्खी, जेसिड, थ्रिप्स और धब्बेदार सूँडी) की संख्या आर्थिक हानी स्तर को पार करती है तो नीम आधारित किटनाशक का 5मि प्रति लीटर पानी के साथ फसल में छिड़काव करे |

नोट : यह अनुवाद गूगल की मदद से किया गया है चुकी अनुवाद कार्य में प्रविणता हासिल नहीं है| अत: उपरोक्त अनुवाद कार्य विशेषज्ञ से जांच ले|

- रजनीकान्त चतुर्वेदी
सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी